प्रकरण- 1: हिंदी का मानक स्वरूप और भाषागत सामान्य भूलें

हिंदी में 'मानक' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द 'स्टैंडर्ड' के प्रतिशब्द के रूप में किया जाता है। भाषा का मानक रूप वस्तुत: भाषा के व्याकरण सम्मत शुद्ध, परिनिष्ठित, परिमार्जित रूप को कहा जाता है। इस मुकाम तक पहुँचने के लिए भाषा को कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। पहले स्तर पर भाषा का मूल रूप बोली होता है, इसका क्षेत्र सीमित होता है। इसकी कोई निर्धारित व्याकरणिक संरचना निश्चित नहीं होती और इसका प्रयोग प्राय: बातचीत में ही किया जाता है। अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से कई बार बोली का प्रयोग क्षेत्र विस्तृत होने लगता है और बोली लिपिबद्ध होकर साहित्य-सृजन का आधार बन जाती है। जब भाषा का लिखित रूप सामने आता है तो उसमें ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि स्तरों पर एकरूपता के प्रयास किए जाने लगते हैं। एकरूपता के ये प्रयास ही भाषा को मानक रूप प्रदान करते हैं।

मानक हिंदी का स्वरूप - हिंदी के मानक स्वरूप को ध्वनि स्तर, शब्द स्तर, रूप स्तर एवं वाक्य स्तर पर देखा जा सकता है-

1. ध्वनि स्तर

क मानक हिंदी की ध्वनियों को दो वर्गों (स्वर एवं व्यंजन) में बाँटा गया है। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि स्वर हैं, तो क्, ख्, से ह् तक व्यंजन हैं। सामान्यत: हिंदी व्यंजनों को स्वर के साथ ही (क्+अ = क) क, ख, ग - लिखा व बोला जाता है।

ख 'अ' और 'ह' ध्वनियाँ साथ आने पर 'अ' का 'ऐ' उच्चारण मानक माना जाता है; महल - मैहल, शहर - शैहर, कहता - कैहता,

ग हिंदी की ध्वनि व्यवस्था में स्वरों अर्थात मात्राओं के कारण तो अर्थ में अंतर आता ही है (अवधि - काल, अवधी - बोली अथवा नाम) बलाघात, अनुतान, अनुनासिकता, एवं दीर्घता (मात्रा) भी अर्थ निर्णय में सहायक होते हैं, जैसे-

बलाघात-	**आज** कम से कम बोलूँगा।	(आज अवश्य)
	आज **कम से कम** बोलूँगा।	(बहुत कम)
	आज कम से कम **बोलूँगा**।	(बोलूँगा अवश्य)
अनुतान -	राम गया।	(सामान्य)
	राम गया!	(आश्चर्य)
	राम गया?	(प्रश्न)

संहिता(संगम-विवृति) कम + बल =कंबल
हो + ली = होली
पी + ली =पीली

अनुनासिकता- भाग - भांग, गोद - गोंद, उगली - उँगली

दीर्घता - पता - पत्ता, बला - बल्ला

घ 'ऐ', 'औ', के बाद 'य' अथवा 'व' आने पर इसका उच्चारण मूल स्वर के रूप में न होकर 'अय्', 'अव्' के रूप में मानक माना जाता है; जैसे : नैया- नय्या, गैया- गय्या, कौवा- कउवा।

ड 'ज्ञ' का उच्चारण संस्कृत परंपरा के विद्वान 'ज्यँ' के रूप में करते हैं परंतु हिंदी में इसका मानक उच्चारण 'ग्य' है।

च हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी शब्दों में 'ऑ', 'ज़', 'फ' ध्वनियों का यही मानक उच्चारण माना जाता है- बॉल, कॉफी, जू, फाइल आदि।

छ हिंदी में प्रयुक्त होने वाले अरबी-फारसी शब्दों में क़, ख़, ग़, ज़, फ़, का यही उच्चारण मानक माना जाता है - क़ैद, ख़ाला, ग़म, ज़रूर, फ़ालतू। (परंतु हिंदी का प्रयोग करने वाली युवा पीढ़ी के उच्चारण में क़, ग़ का प्रयोग लगभग समाप्त हो गया है।)

2. शब्द स्तर

क हिंदी में मुख्यत: चार स्रोतों से शब्द आए हैं:-
तत्सम - कर्म, विद्या, ज्ञान, क्षेत्र, पुष्प, मृग आदि।
तद्भव -हाथ(हस्त), काम(कर्म), घर(गृह) आदि।
आगत - इंजन, मोटर, प्रेस, पेस्ट्री, चपरासी, हमला, मकान
अज्ञात व्युत्पत्ति (देशज) शब्द -कबड्डी, चूहा, पेड़, टट्टू आदि

ख हिंदी में दो लिंग (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग) और दो वचन (एकवचन, बहुवचन) हैं।

ग जिन शब्दों के एकाधिक रूप प्रचलित हैं, उनमें से एक का प्रयोग मानक है जैसे: मोजा, लौकी एवं गंजी का मानक रूप क्रमश: जुराब, घिया व बनियान हैं।

घ हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनकी वर्तनी के दो रूप प्रचलित हैं ; जैसे- गरदन-गर्दन, बिलकुल- बिल्कुल, दुकान-दूकान, सरदी-सर्दी इनमें से पहले रूप को प्राथमिकता दी जाती है।

ङ हिंदी में शब्दों का निर्माण उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, द्विरुक्ति (चलते-चलते), पुनरुक्ति (माल-वाल, रोटी-बोटी) द्वारा होता है।

च मानक हिंदी में कारकों के लिए विभक्ति चिह्न निश्चित हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम पदों के बाद परसर्ग के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे- राम ने, उसने, भाई के लिए, तुमको (तुम्हें)।

3. रूप स्तर

रूप स्तर पर शब्दों को विकारी और अविकारी दो रूपों में बाँटा जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण विकारी शब्द हैं तथा क्रिया विशेषण, संबंध सूचक, समुच्चयबोधक एवं संबोधन सूचक अविकारी शब्द हैं। विकारी शब्दों के रूप में परिवर्तन होता है, जो इस प्रकार है:-

क 'आ' से अंत होने वाले पुल्लिंग शब्द बहुवचन में 'ए' (े) हो जाते हैं; जैसे- लड़का-लड़के, कपड़ा-कपड़े, गधा-गधे। परंतु संस्कृत, व्यक्तिवाचक संज्ञा और संबंध सूचक शब्दों में यह परिवर्तन नहीं होता; जैसे-आगरा, कमला, दादा, पिता, नाना, राजा, नेता। शेष अ, इ, ई, उ, ऊ आदि से अंत होने वाले शब्द दोनों वचन में समान रहते हैं; जैसे-डाकू, साधु, ऋषि, हाथी।

ख स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में परिवर्तन।

1. 'अ' से अंत होने वाले स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में एँ (-ॅं-) में बदल जाते हैं; जैसे- बहन-बहनें, गाय-गाएँ।

2. 'आ' से अंत होने वाले शब्दों में 'आ' के आगे 'एँ' जोड़ा जाता है; जैसे-माता-माताएँ, महिला-महिलाएँ।

3. इ-ई से अंत होने वाले स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'इयाँ' हो जाते हैं; जैसे-नीति-नीतियाँ, रानी-रानियाँ, लड़की-लड़कियाँ।

4. उ-ऊ से अंत होने वाले शब्द बहुवचन में 'उएँ में बदल जाते है; जैसे- वस्तु-वस्तुएँ, वधू-वधुएँ।

ग सर्वनामों में परसर्गों के प्रभाव से परिवर्तन होता है; जैसे- मैं+को=मुझे, वह+ने=उसने, वह+को=उसको (उसे), ये+को=इनको (इन्हें)।

***कारक व विभक्ति- कर्ता (ने), कर्म (को), करण (से, के द्वारा), संप्रदान (के लिए), अपादान (से), संबंध (का, के, की, रा, रे, री), अधिकरण (में, पर), संबोधन (हे, अजी, अरे)।**

घ आकारांत विशेषणों में विशेष्य के लिंग, वचन और कारक के कारण रूप परिवर्तन होता है; जैसे-छोटा लड़का/ छोटी लड़की/ मेरा घर/ मेरी घड़ी।

च क्रिया में कर्ता, काल, वाच्य आदि के आधार पर रूप परिवर्तन होता है; जैसे- मैं खा (ता/ती) हूँ। हम खा (ते/ती) हैं। वह जाए। वे जाएँ। हिंदी में' करना 'क्रिया के 'करा', 'करिए' आदि क्रिया रूप अमानक हैं, मानक रूप 'किया'/ 'कीजिए' होंगे।

4. वाक्य स्तर पर

क हिंदी भाषा में पदक्रम की दृष्टि से वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म और अंत में क्रिया आती है। जैसे:- **मोहन** ने **पत्र लिखा** ।

ख विशेषण का प्रयोग प्राय: विशेष्य के पूर्व होता है। जैसे:-राम **अच्छा लड़का** है।
क्रिया विशेषण का प्रयोग प्राय: क्रिया के पूर्व होता है। जैसे:- वह **धीरे-धीरे चल** रहा है।

ग वाक्य में अप्रत्यय कर्ता कारक (जिस कर्ता के साथ विभक्ति नहीं होती) की क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरुष के अनुसार होती है। जैसे- लड़का जाता है। लड़की जाती है। लड़के जाते हैं। लड़कियाँ जाती हैं। सप्रत्यय कर्ता के साथ कर्म होने पर क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कर्म के अनुसार होता है; जैसे-राम ने खत लिखा। राम ने किताब पढ़ी। राम ने फिल्म देखी।

भाषागत सामान्य भूलें - लेखन के दौरान भाषा प्रयोक्ता से किसी न किसी कारण से अमानक शब्द रूप, व्याकरण रूप, वर्तनी आदि से संबंधित गलतियाँ हो जाती हैं। यहाँ पर कुछ इसी प्रकार की भूलों को बताया जा रहा है:-

1. स्वर या मात्रा संबंधी

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अगामी	आगामी	अतिथी	अतिथि
हानी	हानि	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
गृहणी	गृहिणी	झौपड़ी	झोंपड़ी
मिठायी	मिठाई	गुरू	गुरु

जादु	जादू	पूछिये	पूछिए

2. **व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ**

बूढा	बूढ़ा	ढ़ोल	ढोल
चपड़ासी	चपरासी	अमावश्या	अमावस्या
पिंजडा	पिंजरा	आर्शिवाद	आशीर्वाद
दवाब	दबाव	नर्क	नरक
गोष्टी	गोष्ठी	सृष्ठि	सृष्टि

3. **लिपि संबंधी**

शानत	शांत	शुरु	शुरू
बोटल	बोतल	सन्यास	संन्यास

4. **वचन एवं लिंग संबंधी (वाक्य स्तर पर)**

अशुद्ध	**शुद्ध**
प्रयाग में तीन नदी मिलती हैं।	प्रयाग में तीन <u>नदियाँ</u> मिलती हैं।
मीरा प्रसिद्ध कवि थी।	मीरा प्रसिद्ध कवयित्री थीं।
अधिकारी के पास अनेकों फाइल हैं।	अधिकारी के पास <u>अनेक फाइलें</u> हैं।

5. **वचन संबंधी**

बंबई में पाँच गिरफ्तारी हुई।	मुंबई में पाँच गिरफ्तारियाँ हुईं।
जैन साहित्य प्राकृत में लिखे गए हैं।	जैन साहित्य प्राकृत में लिखा गया है।
चार वर्णों का नाम बताओ।	चार वर्णों के नाम बताओ।

6. **विभक्ति संबंधी-**

हम आप से कह रहे थे।	हमने आप से कहा था।
मैं उन्हें नहीं पहचाना।	मैंने उन्हें नहीं पहचाना।
मैंने वहाँ जाना है।	मुझे वहाँ जाना है।
वह अपना भाग्य कोस रहा है।	वह अपने भाग्य को कोस रहा है।
जनता के अंदर अविश्वास पैदा हो गया।	जनता में अविश्वास पैदा हो गया।

7. **शिरोरेखा संबंधी**

पीली भंग	पी ली भंग

गंगा काजल	गंगा का जल
कहो तो ला दूँ	कहो तो ला दूँ

8. पदक्रम संबंधी

मुझे एक चाय का कप दे दो।	मुझे चाय का एक कप दे दो।
केवल यहाँ दो आदमी हैं।	यहाँ केवल दो आदमी हैं।
उसने बच्चे को काटकर सेब खिलाया।	उसने सेब काटकर बच्चे को खिलाया।

9. विशेषण और क्रिया विशेषण संबंधी

राम की बुद्धि बड़ी तेज है।	राम की बुद्धि बहुत तेज है।
तुम सबसे सुंदरतम हो।	तुम सब से सुंदर हो।
निदेशक सायंकाल के समय आएंगे।	निदेशक सायंकाल आएंगे।

10. क्रिया संबंधी

मुमताज़ विलाप करके रोने लगी।	मुमताज़ विलाप करने लगी।
आप टाइप करोगे।	आप टाइप करेंगे।
क्या आप भोजन किए हैं?	क्या आपने भोजन किया है?

11. शब्दों की आवृत्ति संबंधी

सारे दफ्तर भर में फाइल ढूंढ ली।	सारे दफ्तर में फाइल ढूँढ ली।
उपनिदेशक दौरे से वापस लौट आए हैं।	उपनिदेशक दौरे से लौट आए हैं।
कृपया छुट्टी स्वीकृत करने की कृपा करें।	कृपया छुट्टी स्वीकृत करें।